शब्द-संपदा

बड़भागी – भाग्यवान
अपरस – अलिप्त, नीरस, अछूता
तगा – धागा, बंधन
पुरइनि पात – कमल का पत्ता
दागी – दाग, धब्बा
माहँ – में
प्रीति-नदी – प्रेम की नदी
पाउँ – पैर
बोर्‍यौ – डुबोया
परागी – मुग्ध होना
गुर चाँटी ज्यौं पागी – जिस प्रकार चींटी गुड़ में लिपटती है, उसी प्रकार हम भी कृष्ण प्रेम में अनुरक्त हैं

अधार – आधार
आवन – आगमन
बिथा – व्यथा
बिरहिनि – वियोग में जीने वाली
बिरह दही – विरह की आग में जल रही हैं
हुतीं – थीं
गुहारि – रक्षा के लिए पुकारना
जितहिं तैं – जहाँ से
उत – उधर, वहाँ
धार – योग की प्रबल धारा
धीर – धैर्य
मरजादा – मर्यादा, प्रतिष्ठा
न लही – नहीं रही, नहीं रखी
हारिल – हारिल एक पक्षी है जो अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी लिए रहत है, उसे छोड़ता नहीं है

नंद-नंदन उर...पकरी – नंद के नंदन कृष्ण को हमने भी अपने हृदय में बसाकर कसकर पकड़ हुआ है

जक री – रटती रहती हैं
सु – वह
व्याधि – रोग, पीड़ा पहुँचाने वाली वस्तु
करी – भोगा

Scanned with CamScanner

तिनहिं	–	उनको
मन चकरी	–	जिनका मन स्थिर नहीं रहता
मधुकर	–	भौंरा, उद्धव के लिए गोपियों द्वारा प्रयुक्त संबोधन
हुते	–	थे
पठाए	–	भेजा
आगे के	–	पहले के
पर हित	–	दूसरों के कल्याण के लिए
डोलत धाए	–	घूमते-फिरते थे
फेर	–	फिर से
पाइहैं	–	पा लेंगी
अनीति	–	अन्याय

Scanned with CamScanner

भागीरथी बाल शिक्षा सदन सै० स्कूल
दयालपुर (दिल्ली-94)
(सत्र-2020-21)

Page No.
Date:

विषय- हिन्दी (काव्य खण्ड)
कक्षा- X

पाठ-1 शीर्षक-पद कवि- सूरदास

(विशेष - • यह कार्य पहले दिए गए कार्य का शेष कार्य है, अतः पाठ 1 के पहले पद्य कार्य के आगे से ही निम्नांकित कार्य करें।)
(• सर्वप्रथम प्रथम चित्र में दिए गए शब्दार्थ कापी में लिखें।)

पाठ्य पुस्तक में दिए गए पाठ आधारित
प्रश्न- अभ्यास (उत्तर- सहित)

प्रश्न (1)- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर - गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव प्रेम के स्पर्श और कृष्ण- प्रेम के बंधन में बंधे ही नहीं, जो गोपियों की वेदना का अनुभव कर पाते। अतः वे बहुत भाग्यशाली हैं। इस प्रकार गोपियाँ अप्रत्यक्ष रूप से उद्धव को दुर्भाग्यशाली कह रही हैं। जो कृष्ण रूपी प्रेम की नदी के इतना समीप होते हुए भी उसके प्रेम जल में पाँव तक नहीं डुबा पाए।

प्रश्न (2)- उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किससे की गई है?

उत्तर - गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना अनेक वस्तुओं या पदार्थों से की है। उनके अनुसार उद्धव कमल के पत्ते और तेल की गागर के समान हैं, जो जल में होने पर भी जल के स्पर्श से दूर रहते हैं अर्थात पानी में पड़े रहने पर भी पानी इनका स्पर्श नहीं करता। उसी प्रकार उद्धव भी श्रीकृष्ण के प्रेम रूपी जल को स्पर्श तक नहीं कर पाए और उद्धव पर कृष्ण के प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

प्रश्न (3)- उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह-अग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर - कृष्ण के मथुरा जाने के बाद गोपियाँ उनके विरह की ज्वाला में दग्ध थीं और उन्हें पूर्ण विश्वास था कि एक दिन कृष्ण अवश्य वापिस आयेंगे किन्तु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव के माध्यम से योग का संदेश भेजा, तब जिस प्रकार घी अग्नि को बढ़ा देता है उसी प्रकार उद्धव के उस योग संदेश ने कृष्ण के आने की आशा को समाप्त करके गोपियों की विरह अग्नि को और बढ़ा दिया।

प्रश्न (4)- 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर = 'मरजादा न लही' के माध्यम से गोपियों की विरह-वेदना न सहन करने की मर्यादा और श्रीकृष्ण द्वारा गोपियों के प्रेम-सम्मान को ठेस

(क्र०प०उ०)

Scanned with CamScanner

पहुँचा कर मर्यादा न रहने की बात कही जा रही है। कृष्ण ने पहले तो गोपियों से प्रेम किया, फिर उद्धव को योग संदेश देकर गोपियों के पास भेज दिया, तब गोपियों के धैर्य और स्त्री-मर्यादा को ठेस पहुँची है, जब उन्हें अपने मनःस्थिति रोष रूप में उद्धव के सम्मुख प्रकट करनी पड़ी।

प्रश्न(5) = कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर = गोपियों के विचारों एवं कार्यों से कृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम अभिव्यक्त हुआ है। गोपियों के लिए श्रीकृष्ण 'हारिल पक्षी' की लकड़ी की भाँति हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पैरों में सदैव एक लकड़ी (सहारे के रूप में) पकड़े रहता है, उसी प्रकार गोपियों ने भी कृष्ण प्रेम (रूपी सहारे को) अपने हृदय में पूरी दृढ़ता और आस्था से पकड़ रखा है। अब दिन-रात, सोते-जागते वे कृष्ण के नाम की ही रट लगाए रखती हैं और जिस प्रकार चींटी गुड़ से चिपटी रहती है, उसी प्रकार गोपियाँ भी कृष्ण-प्रेम में अनुरक्त रहते हैं।

प्रश्न (6) = गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है?

उत्तर — गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है, जो अस्थिर मन वाले हैं, जिनका मन चकरी की भाँति इधर-उधर घूमता रहता है। उनका मानना है कि वे तो अपना मन कृष्ण में स्थिर कर चुकी हैं, उनके ऊपर इस ज्ञान का कोई प्रभाव नहीं होगा।

प्रश्न (7) = प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर = 'सूरदास' कृत पदों में गोपियों का योग-साधना के प्रति उपेक्षा भरा नकारात्मक दृष्टिकोण उभरकर आया है। गोपियाँ योग को व्यर्थ मानती हैं उनकी दृष्टि में योग कड़वी ककड़ी के समान अरुचिकर है, जिसे कोई नहीं खाना चाहता। उनके विचार में योग एक ऐसा रोग है, जिसे उन्होंने न पहले कभी देखा, न सुना। गोपियों का मानना है कि योग तो अस्थिर मन वालों के लिए है, जबकि उनका मन तो श्रीकृष्ण में स्थिर हो चुका है।

प्रश्न (8) = गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए, जिनके कारण वे अपना मन वापिस पा लेने की बात कहती हैं?

उत्तर = गोपियों को लगता है कि कृष्ण मथुरा जाकर बदल गए हैं, वे पूर्णतः कुशल राजनीतिज्ञ हो गए हैं, इसी लिए प्रेम संदेश के स्थान पर उन्होंने उद्धव द्वारा निर्गुण ब्रह्म व योग-साधना का उपदेश भेजा है। वे प्रजा अर्थात् गोपियों के हित की रक्षा करने के स्थान पर, अन्याय कर रहे हैं। उन्होंने स्वयं न आकर उद्धव को योग-शिक्षा देने के लिए भेजा है, इसलिए गोपियों के मन में कृष्ण के प्रति क्रोध है। अतः वे भी अपना मन वापस पा लेने की बात करती हैं।

(कृ०प०३०)

Scanned with CamScanner

Page No.
Date:

प्रश्न (9) = गोपियों ने अपनी वाक्-चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्-चातुर्य की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर = सूरदास के प्रस्तुत पदों में गोपियों ने अपनी-चतुराई से उद्धव जैसे ज्ञानी को परास्त कर दिया। उन्होंने श्री कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को दृढ़ और सर्वोत्तम बताया है। उन्हें उद्धव द्वारा दी गई योग साधना में कोई रुचि नहीं है। उन्होंने उद्धव और श्री कृष्ण के प्रेम की तुलना कमल के पत्ते और तेल लगी गागर से की है, उन्हें बड़भागी कहकर उद्धव का मज़ाक बनाया है और उन्हें अपना ज्ञान चंचल मन वाले व्यक्तियों को देने को कहा है। इस प्रकार गोपियों ने अपने वाक्-चातुर्य के आधार पर उद्धव को निरुत्तर कर दिया। उनकी वाणी में व्यंग्यात्मकता, दृढ़ता, विश्वास व एकनिष्ठ प्रेम झलकता है।

प्रश्न (10) संकलित पदों को ध्यान में रखते हुए 'सूर' के 'भ्रमरगीत' की मुख्य विशेषताएँ बताइए।

उत्तर = 'सूरदास' रचित 'भ्रमरगीत' के संकलित पदों में कृष्ण के मथुरा जाने के बाद स्वयं न लौटकर उद्धव के जरिए गोपियों के पास योग-ज्ञान भेजा जाना, गोपियों की विरह-वेदना, गोपियों द्वारा भ्रमर के बहाने उद्धव पर व्यंग्य बाण छोड़ना, योग साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़-विश्वास प्रकट करना तथा उद्धव को राजधर्म (प्रजा का हित) याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है। प्रस्तुत दृष्टांतों के सत्यापन हेतु 'आलंकारिक' एवं 'शृंगार रस' से ओत-प्रोत साहित्यिक 'ब्रजभाषा' का प्रयोग किया गया है।

निर्देश - • छात्र उपरोक्त कार्य को कापी में क्रमानुसार, स्वच्छतापूर्वक करें, विद्यालय खुलने पर सम्पूर्ण गृह-कार्य जाँचा जाएगा।

(गृहकार्य)- • निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर पाठ के आधार पर विवेकपूर्वक लिखें →

प्रश्न-(i) गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए?

प्रश्न (ii) गोपियों ने यह क्यों कहा कि हरि अब राजनीति पढ़ आए हैं? क्या आपको गोपियों के इस कथन का विस्तार समकालीन राजनीति में नज़र आता है? स्पष्ट कीजिए।

Scanned with CamScanner